पाठ 10 **दिसम्बर 1-7**

एकता और टूटा हुआ संबंध

सब्त अपराह्न **दिसम्बर 1**

इस सप्ताह के पाठ के लिए पढ़ें: 2 तीमु० 4:11, फिलेमोन 1-25, 2कुरि० 10:12-15, रोम० 5: 8-11, इफि० 4:26, मत्ती 18:15-17.

याद वचन: *"क्योंकि बैरी होने की दशा में तो उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ फिर मेल हो जाने पर उसके जीवन के कारण हम उद्धार क्यों न पाएँगे?" (रोम० 5:10)।*

हमने जैसा देखा है, पेंतिकोस्ट के बाद भी विश्वासियों के बीच संबंध समय-समय पर तनावपूर्ण रहा। नया नियम इस तरीके के पुनरावृत उदाहरणों को रिकार्ड करता (लेखा-जोखा रखता) है जिस चुनौती से कलीसिया के अगुवे और सदस्य होकर गुजरे। ये सिद्धान्त आज कलीसिया के लिये अत्यंत ही मूल्यवान हैं। वे सकारात्मक परिणामों को प्रकट करते हैं जो आ सकता है जब हम संघर्षों के साथ सरोकार (सौदा) हेतु बाईबलीय सिद्धान्तों का प्रयोग करते हैं और मसीह में हमारी एकता को संरक्षित करते हैं।

इस सप्ताह के पाठ में हम पुन:स्थापित संबंध पर प्रकाश डालेंगे और इस पर भी ध्यान देंगे कि किस प्रकार हमारा मानव संबंध मसीह में हमारी एकता को प्रभावित करता है। पवित्र आत्मा की सेवकाई परमेश्वर और एक दूसरे के निकट लोगों को लाने की क्रिया को शामिल करती है।

यह परमेश्वर के साथ हमारे संबंध और दूसरों के साथ हमारे संबंध की दीवार तोड़ने को शामिल करती है। संक्षिप्त में सुसमाचार की शक्ति का महानत्तम प्रदर्शन आवश्यक रूप से वह नहीं है जो कलीसिया कहती है परन्तु यह कि कलीसिया कैसे रहती है।

"यदि आपस में प्रेम रखोगे तो इसी से सब जानेंगे, कि तुम मेरे चेले हो" (यूहन्ना 13:35)। इस प्रेम के बिना कलीसिया की एकता के विषय हमारी सारी बातें व्यर्थ हैं।

रविवार **दिसम्बर 2**

पुन:स्थापित मित्रता

पौलुस और बरनबास ने यीशु की गवाही के लिये एक साथ काम किया। परन्तु वे यूहन्ना मरकुस के विषय में सहमत नहीं थे (प्रेरि० 15:

---

* सब्त, दिसम्बर 8 की तैयारी के लिये इस सप्ताह के पाठ का अध्ययन करें।

36-39)। सुसमाचार प्रचार करने में एक संभावित डर ने यूहन्ना मरकुस को पौलुस और बरनबास को छोड़कर वापस घर आने को बाध्य किया (प्रेरि० 13: 13)।

"यूहन्ना मरकुस का कर्त्तव्य निर्वाहण से मुँह मोड़कर भागना, उसके प्रति पौलुस का प्रतिकूल फैसला हुआ, और यह कुछ समय के लिये बहुत उग्रतापूर्वक हुआ। दूसरी ओर बरनबास उसे अनुभव की कमी का हवाला देते हुए माफीनामा देना चाहता था। वह चिंतित था कि मरकुस को सेवकाई का काम नहीं छोड़ना था, क्योंकि उसने उसमें योग्यताएँ देखी थीं जो उसे मसीह के लिये एक योग्य कर्मी बना सकता था"– Ellen G. White, The Acts of the Apostles P. 170.

यद्यपि परमेश्वर ने इन सब लोगों को प्रयुक्त किया, उनके बीच में विवाद के समाधान होने की जरूरत थी। जिस प्रेरित ने अनुग्रह का प्रचार किया, उसे युवा प्रचारक को अनुग्रह देने की जरूरत थी जिसने उसे निराश किया। क्षमाशील प्रेरित को क्षमा देने की जरूरत थी। यूहन्ना मरकुस बरनबास की देख-रेख में बढ़े (प्रेरि० 15: 39), और अंततः इन बदलावों ने स्पष्ट रूप से पौलुस के हृदय को स्पर्श किया।

तीमुथी और कुलुस्सी को लिखी पौलुस की पत्री किस प्रकार यूहन्ना मरकुस के साथ उसके नवीकृत संबंध और इस युवा प्रचारक में नये आत्म विश्वास को प्रकट करती है? कुलु० 4: 10-11; 2तीमु० 4: 11.

यद्यपि यूहन्ना मरकुस के साथ पौलुस के मेल-मिलाप का ब्योरा अधूरा है, बाईबल का रिकार्ड स्पष्ट है। यूहन्ना मरकुस प्रेरित का एक भरोसेमंद साथी बना। पौलुस ने यूहन्ना मरकुस को कुलुस्सी की कलीसिया में एक सहकर्मी" के तौर पर बहुत प्रशंसा की। पौलुस के जीवन के अंत में, उसने तिमोथी को दृढ़ता के साथ उत्साहित किया कि वह यूहन्ना मरकुस को अपने साथ रोम लाये क्योंकि वह "सेवकाई में मेरे लिये उपयोगी है" (2तीमु० 4: 11)। पौलुस की सेवकाई युवा-प्रचारक के द्वारा समृद्ध हुई, जिसे उसने स्पष्ट रूप से क्षमा कर दिया था। उनके बीच की दीवार ढाह गई थी और वे सुसमाचार प्रचार के लिये एक साथ काम कर सकते थे। उनके बीच जो भी विवाद रहे हैं, पौलुस ने न्यायसंगत विचार किया और दोनों साथ काम कर रहे थे।

हम उन्हें क्षमा करना कैसे सीख सकते हैं जिन्होंने हमें दुःख पहुँचाया या निराश किया ? इसी समय क्षमा, विगत संबंध के एक सम्पूर्ण पुनर्स्थापन को क्यों हमेशा शामिल नहीं करता है? इसकी जरूरत हमेशा क्यों नहीं है ?

सोमवार **दिसम्बर 3**

गुलाम से पुत्र

रोम में कारावास के दौरान, पौलुस ने ओनिसियुस नामक एक भगोड़े गुलाम से मुलाकात की, जो कुलस्सी से रोम भाग गया था। पौलुस ने महसूस किया कि वह व्यक्तिगत रूप से ओनीसिमुस के स्वामी को जानता था। फिलेमोन की पत्नी भगोड़े गुलाम के साथ पुनर्स्थापित संबंध के विषय में अपने मित्र को व्यक्तिगत अपील थी।

संबंध पौलुस के लिये मायने रखता था। प्रेरित जानता था कि संबंध में दरार आत्मिक उन्नति और कलीसिया की एकता में बाधक हैं। फिलेमोन कुलुस्सी में कलीसिया का एक अगुवा था। यदि वह ओनिसिमुस के प्रति कˆ वापन को पनाह देता तो, यह अविश्वासी समुदाय के प्रति कलीसिया की गवाही और अपनी मसीही गवाही को रंग देता।

पढ़ें फिलेमोन 1-25. पुनर्स्थापित संबंध के विषय में हम यहाँ पर कौन-से महत्त्वपूर्ण सिद्धांत पाते हैं? याद करें कि मुख्य शब्द "सिद्धांत" है।

_____

_____

_____

पहली दृष्टि में यह कुछ आश्चर्य लगता है कि पौलुस ने गुलामी की बुराईयों के विरुद्ध सख्ती के साथ नहीं बोला। परन्तु पौलुस की कार्यनीति बहुत प्रभावकारी थी। सुसमाचार सभी वर्ण विभेद को समाप्त करता है (गला० 3:28; कुलु० 3:10,11)। प्रेरित ने ओनिसिमुस को वापस फिलेमोन के पास दास के रूप में नहीं परन्तु यीशु में अपने पुत्र के समान और प्रभु में फिलेमोन के प्यारे भाई" के तौर पर भेज दिया (फिलेमोन 16)।

पौलुस जानता था कि भगोड़े दासों का भविष्य निष्कपट होता था। उन्हें किसी भी समय गिरफ्तार किया जा सकता था। उनका जीवन बेसहारा और गरीबी में बर्बाद हो जाता था। परन्तु अब मसीह में फिलेमोन के भाई के तौर पर और एक तत्पर कर्मी के तौर पर ओनिसिमुस का एक बेहत्तर भविष्य हो सकता था। फिलेमोन के अधीन उसका भोजन, रहना, और रोजगार सुरक्षित था। एक टूटे हुए संबंध का पुनर्स्थापन उसके जीवन में एक नाटकीय भिन्नता लाया। वह "विश्वस्त और प्यारा भाई साबित" हुआ और पौलुस के साथ सुसमाचार का सहयोगी बना (कुलु० 4:9)। पौलुस उनके बीच में मेल-मिलाप की अपनी इच्छा में इतना उत्सुक और दृढ़ था कि वह अपनी जेब से किसी भी खर्च के लिये भुगतान करना चाहता था जो यीशु में इन दो विश्वासियों के बीच हुआ।

जिस प्रकार यहाँ पर सुसमाचार के सिद्धान्त दिखते हैं, आप क्या सीख सकते हैं जो दूसरों के साथ बिगड़े संबंध को बेहत्तर करने में आप को मदद करे? आपकी स्थानीय कलीसिया की एकता को तोड़ने से रोकने में ये सिद्धान्त कितने कारगर हो सकते हैं?

मंगलवार **दिसम्बर 4**

एकता के लिये आत्मिक वरदान

जैसा हमने शुरुआती पाठ में देखा, कुरिन्थ की कलीसिया में गंभीर समस्याएँ थीं। पौलुस 1कुरि० 3:5-11, 12:1-11, और 2 कुरि० 10:12-15 में चंगाई और पुनर्स्थापन के लिये किन सिद्धान्तों की रूप-रेखा तैयार करता है, जो कलीसिया की एकता के लिये आवश्यक है?

_____

_____

_____

_____

इन अवतरणों में प्रेरित, कलीसिया की एकता के लिये आवश्यक सिद्धातों की रूप-रेखा तैयार करता है। वह संकेत करता है कि यीशु अपनी कलीसिया में विभिन्न सेवकाईयों को पूरी करने के लिये विभिन्न कर्मियों को इस्तेमाल करता है, यद्यपि सब कोई परमेश्वर के राज्य के निर्माण के लिये एक साथ काम कर रहे हैं (1कुरि० 3:9)।

परमेश्वर हमें सहयोग के लिये नहीं। प्रत्येक विश्वासी मसीह के अंग में सेवकाई और समुदाय की सेवा के लिये सहयोग हेतु परमेश्वर द्वारा प्रदत्त वरदान होता है (1कुरि० 12:11)। वरदान छोटे और बड़े नहीं होते हैं। मसीह की कलीसिया में सभी की जरूरत है (1कुरि० 12:18-23)। हमारा परमेश्वर प्रदत्त वरदान स्वार्थ पूर्ति के लिये नहीं है, ये सुसमाचार प्रचार में सेवकाई हेतु पवित्र आत्मा द्वारा दिया जाता है।

दूसरों के साथ तुलना बुद्धिमानी नहीं, क्योंकि वे हमें निरुत्साहित करेंगे या अभिमानी बनाएँगे। यदि हम सोचते हैं कि दूसरे हमसे बेहत्तर हैं तो हम हताश हो जाएँगे जब हम स्वयं को उनसे तुलना करते हैं और किसी भी सेवकाई में हम सहज ही हतोत्साहित हो जाएँगे। दूसरी ओर यदि हम सोचते हैं मसीह के लिये हमारा काम दूसरों से अधिक प्रभावी है, हम गर्व महसूस करेंगे, जो अंतिम मनोभावना है जिसे किसी भी मसीही को आश्रय देना चाहिए।

दोनों व्यवहार मसीह के लिये हमारे प्रभाव को और एक दूसरे के साथ हमारी सहभागिता को पंगु बनाते हैं। जैसा कि हम प्रभाव के एक क्षेत्र में परिश्रम करते हैं जिसे मसीह ने हमें दिया है, हम मसीह के लिए हमारी गवाही

में संतुष्टि और आनन्द प्राप्त करेंगे। हमारा परिश्रम दूसरों के प्रयास का पूरक होगा और मसीह की कलीसिया राज्य के लिये बहुत बड़ी तरक्की करेगी।

क्या आप किसी के विषय सोच सकते हैं जिसके वरदान ने सेवकाई में आप को ईर्ष्यालु बनाया है? इसी समय दूसरों की तुलना में अकसर आपके वरदान के लिये आपने कितना गर्व महसूस किया है? तर्क यह है कि पौलुस की परवाह पतित मानव के लिये हमेशा मौजूद वास्तविकता है। इससे फर्क नहीं कि हम किस ओर, गिरते हैं, किस प्रकार हम निस्वार्थ व्यवहार सीख सकते हैं, जो मसीह में हमारी एकता को कायम रखने के लिये आवश्यक है?

बुधवार **दिसम्बर 5**

क्षमा

क्षमा क्या है? क्या क्षमा किसी के व्यवहार को उचित ठहराती है जिसने हमारे प्रति बुरी तरह गलत किया है? क्या मेरी क्षमा कसूरवार के पश्चात्ताप पर निर्भर है? क्या होगा यदि कोई जिससे मैं नाराज हूँ मेरी क्षमा के लायक नहीं है?

क्षमा के बाईबलीय स्वभाव को हमें समझने में अग्रलिखित पदस्थल किस प्रकार मदद करते हैं? रोम० 5:8-11; लूका 23:31-34; 2कुरि० 5:20-21; इफि० 4:26.

_____

_____

मसीह ने स्वयं के साथ हमें मिलाप के लिये पहल की। यह है "परमेश्वर की कृपा तुझे मन फिराव को सिखाती है" (रोम० 2:4)। मसीह में हम परमेश्वर के साथ तब ही मिलाप हुए जब हम पापी ही थे। हमारा पश्चात्ताप और पाप-स्वीकृति मेल-मिलाप का सृजन नहीं कर सकते। क्रूस पर मसीह की मृत्यु ने यह किया; हमारा कर्त्तव्य है ग्रहण करना जो हमारे लिये किया गया।

यह सत्य है कि क्षमा की आशीषें हम प्राप्त नहीं कर सकते, जबतक हम हमारे पापों को नहीं स्वीकारते हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि हमारी पाप-स्वीकृति परमेश्वर के हृदय में क्षमा सृजन करती है। क्षमा उसके हृदय में हमेशा से थी। पाप स्वीकृति हमें इसे प्राप्त करने में सक्षम बनाती है (1यूहन्ना 1:9)। पाप-स्वीकृति अति महत्त्वपूर्ण है, इसलिये नहीं कि यह परमेश्वर के नजरिये को हमारे प्रति बदलती है। परन्तु इसलिये कि यह हमारे नजरिये को उसके प्रति बदलती है। जब हम पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित होते हैं और हमारे पापों को स्वीकारते हैं, हम बदल जाते हैं।

क्षमा हमारी आत्मिक भलाई के लिये भी महत्त्वपूर्ण है। किसी को क्षमा करने में असफलता जिसने हमारे प्रति गलत किया है, जौभी कि वे क्षमा के

लायक नहीं हैं, उनसे अधिक हमें दुखित करता है। यदि किसी ने आप के प्रति गलत किया है और दर्द अंदर से फोड़ा (घाव) बनता है क्योंकि आप क्षमा देने में असफल हैं, आप उन्हें आपको अधिक दु:खित करने की अनुमति दे रहे हैं। अकसर कितनी बार ऐसी भावनाएँ और पीड़ा कलीसिया में विभाजन और तनाव के कारण हो जाते हैं। अनसुलझी पीड़ा जो कलीसिया के सदस्यों के बीच होती है मसीह के अंग की एकता को दु:खित करती है।

क्षमा हमारी निंदा से किसी को रिहा कर रही है क्योंकि मसीह ने हमें अपनी निंदा से हमें रिहा कर दिया है। यह दूसरे के व्यवहार को हमारे प्रति न्यायसंगत नहीं बनाता है। हम किसी के साथ मेल मिलाप कर सकते हैं जिसने हमारे प्रति गलत किया है, क्योंकि मसीह ने हमें अपने साथ मेल-मिलाप किया, जब हमने उसके विरुद्ध काम किया। हम क्षमा कर सकते हैं क्योंकि हमें क्षमा की गई है। हम प्रेम कर सकते क्योंकि हमें प्रेम किया गया है। क्षमा एक चुनाव है। हम दूसरे व्यक्ति के कार्यों और व्यवहारों के बावजूद क्षमा का चुनाव कर सकते हैं। यह यीशु की सत्य आत्मा है।

मसीह द्वारा हमें मिली क्षमा को ध्यान में रखते हुए दूसरों को क्षमा करना हम कैसे सीख सकते हैं? यह क्षमा क्यों हमारे मसीही अनुभव का एक आवश्यक पहलू है?

बृहस्पतिवार **दिसम्बर 6**

पुनर्स्थापन और एकता

पढ़ें मत्ती 18:15-17. विवादों के समाधान में हमें मदद के लिये यीशु हमें कौन-से तीन उपाय देता है जब हमारे विरुद्ध दूसरा चर्च मेंबर गलत करता है? हमारे सामयिक परिस्थितियों में इन वचनों को हमें किस प्रकार लागू करना है?

_____

_____

मत्ती 18 में सलाह देने की यीशु की इच्छा है कि कलीसिया के भीतर पारस्परिक संघर्ष जितना संभव हो छोटे दल में हो। उसकी इच्छा है कि दो लोग अपनी समस्या आपस में सुलझा लें। इसी कारण यीशु घोषणा करता है, "यदि तेरा भाई तेरे विरुद्ध अपराध करे, तो जा और अकेले में बातचीत करके उसे समझा; यदि वह तेरी सुने तो तू ने अपने भाई को पा लिया" (मत्ती 18:15)। जिस प्रकार दो के संघर्ष में अधिक लोग शामिल होने से समस्या बढ़ती है और पूरा समुदाय प्रभावित होता है, विश्वासियों की सहभागिता में असर होता है। लोग पक्ष लेते हैं और जंग की लकीरें खिंच जाती हैं। परन्तु जब मसीही समस्या को एकान्त में सुलझाने की कोशिश करते हैं और मसीही

प्रेम के आत्मा में और परस्पर समझदारी में एक मेल-मिलाप का वातावरण सृजित होता है। पवित्र आत्मा के काम करने के लिये एक वातावरण सही है ताकि उनके साथ काम किया जाये जैसे कि वे अपनी मत विभिन्नता के समाधान के लिये प्रयासरत हैं।

कभी-कभी विवाद समाधान हेतु व्यक्तिगत अपील अप्रभावी होती हैं। इस उदाहरण में यीशु हमें आमंत्रित करता है कि हम एक या दो अन्य को साथ लें। मेल-मिलाप का यह दूसरा कदम, पहला कदम के बाद होना चाहिये। उद्देश्य है लोगों को एक साथ लाना, न कि उन्हें दूर कर देना। एक या दो जो मुक्त भोगी (अपमानित) दल में मिल जाता है वह अपना पक्ष साबित करने को नहीं आ रहा और न ही दूसरे दल को दोषारोपित करता है। वे मसीही प्रेम और दया के साथ सलाहकार के तौर पर आते हैं और प्रार्थना साथी के तौर पर, ताकि उस प्रक्रिया में शामिल हों जो दो रुठे दल के लोगों को एकता के सूत्र में लाते हैं।

वैसे भी अवसर आते हैं जब समस्या समाधान के सारे प्रयास काम नहीं करते हैं। इस स्थिति में, यीशु हमें निर्देश देता है कि समस्या को कलीसिया के सामने लायें। वह निश्चित रूप से यह नहीं कह रहा कि सब्त सुबह को उपासना सभा में व्यवधान पैदा कर व्यक्तिगत विवाद के मुद्दे को लाया जाये। यदि प्रथम दो कदम असफल हुए तो, विवाद के मुद्दे को लाने का उचित स्थान चर्च बोर्ड होता है। पुनः मसीह का उद्देश्य मेल-मिलाप है। यह एक दल को दोषारोपित कर दूसरे को दोषमुक्त करना नहीं है।

"नाराजगी सहन न करो कि डाह परिपक्व हो जाये। घाव को सड़ने और विषयुक्त शब्दों में फोड़ने मत दो, जो सुनने वाले के मन को दूषित कर देता है। बुरे विचारों को तुम्हारे और उसके मन में भरने मत दो। अपने भाई के पास जाओ और नम्रता और विश्वस्तता के साथ विषय वस्तु पर उससे बात करो।"- Ellen G. White, Gospel Workers, P. 499.

शुक्रवार **दिसम्बर 7**

अतिरिक्त अध्ययनः Read the article "Forgiveness," PP. 825,826 in The Ellen G. White Encyclopedia.

"जब कामगारों के मनों में मसीह रहता है, जब सभी स्वार्थ मर जाते हैं, जब कोई प्रतिस्पर्धा न हो, जब सर्वोच्चता के लिये कोई संघर्ष न हो; जब एकता कायम हो, जब वे स्वयं को शुद्ध करते हैं, ताकि एक दूसरे के प्रति प्रेम दिखे और महसूस किया जा सके, तब पवित्र आत्मा के अनुग्रह की बारिश निश्चय ही उनके ऊपर होगी, और तब परमेश्वर की प्रतिज्ञा एक बिन्दु भी असफल नहीं होगी।" - Ellen G. White, Selected Messages, book 4 P. 175.

"यदि हम मसीह के साथ हमारे शरण स्थान और ऊँचे दुर्ग के रूप में प्रभु के बड़े दिन में खड़े होते हैं, हमें सभी ईर्ष्या, सर्वोच्चता के लिये सभी संघर्षों को छोड़ना होगा। हमें बिलकुल ही इन अशुद्ध चीजों को समूल नष्ट करना होगा, ताकि जीवन में ये पुनः सिर न उठा सकें। हमें संपूर्ण रूप से स्वयं को प्रभु की ओर कर देना चाहिए।"– Ellen G . White, Last Day Events, P. 190.

विचार-विमर्श के लिये प्रश्नः

1. पढ़ें कुलु० 3: 12-17. मसीही गुणों पर चर्चा करें जिन्हें आत्मसात करने के लिये प्रेरित पौलुस कुलुस्सी की कलीसिया को प्रोत्साहित करता है। ये गुण क्यों सभी संघर्षों के समाधान की नींव है? सिद्धान्तों के पालन में ये हमें कैसे अगुवाई करते हैं जिसे यीशु हमें मत्ती 18: 15-18 में देता है ?
2. कुलु० 3: 12-17 और इनमें पाई जाने वाली शिक्षा पर पुनरावलोकन करें। ये चीजें कलीसिया की एकता के लिये क्यों इतनी आवश्यक हैं?
3. यदि हम अपनी कलीसिया में देखें, जो संपूर्ण रूप से सेवेंथ-डे-ऐडवेंटिस्ट है, एकता के प्रकार से, कौन-सी बड़ी चीज है जो हमें पीछे खींचती है, जो संसार तक पहुँच के लिये जरूरी है? क्या ये हमारी शिक्षाएँ और सिद्धान्त हैं? संभवतः नहीं। ये वही चीजें हैं जिन्हें परमेश्वर ने हमें संसार को बतलाने के लिये दिये हैं। हो सकता है हमारे पारस्परिक संबंध में बहुत-सी समस्याएँ हैं। क्यों न हम हमारे आंतरिक बदलाव हेतु पवित्र-आत्मा से आग्रह करें कि हम कलीसिया में संपूर्ण एकता देख सकें?

साराँशः- यीशु मसीह का सुसमाचार चंगाई और परिवर्तन के विषय में है। और जब ये आते हैं दूसरों के साथ हमारे संबंध को प्रभावित करने में ये मदद नहीं करते। बाईबल हमें सशक्त सिद्धांत और उद्धाहरण देती है कि किस प्रकार पापी संसार में भी हम दूसरों के साथ अच्छे और नजदीकी रिश्ते कायम कर सकते हैं।